STUDENT FEEDBACK

ANALYSIS REPORT 2022-2023

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जयिनी में वेद वेदाङ्ग एवं साहित्य से प्रारम्भ कर कला संकाय पर्यन्त कुल छः संकाय वर्तमान में सञ्चालित है। जिसमें कुल चौबीस कार्यक्रम सञ्चाल्यमान है। जिनमें वेद, व्याकरण, दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, ज्योतिर्विज्ञान, वास्तु, योग इत्यादि विषयों का अध्ययन भारत के विभिन्न प्रान्तों से प्राप्त सुयोग्य शिक्षकों के द्वारा कराया जाता है।

विश्वविद्यालय में विभिन्न पाठ्यक्रम सञ्चालित है। जैसे वेद। वेद ज्ञानराशि है। अर्थात् समस्त ज्ञानराशि का मूल वेद है। वेद विषय में यहाँ सस्वर मन्त्रसहित भाष्य का भी अध्ययन कराया जाता है। व्याकरण मुख्य रूप से वेद का मुख है। यहां व्याकरण का शास्त्रीय ग्रन्थों का आमूलचूल अध्ययन कराया जाता है। सभी रसों के साथ अलंकारग्रन्थों तथा संस्कृत वाङ्मय के विख्यात साहित्यग्रन्थों का अध्ययन साहित्यविभाग में होता है। जैसे मनुष्य विना चक्षु के दूर तक देख नहीं सकता अतः दूरदर्शिता सम्पादन हेतु वैदिकपद्धत्या कालगणना की सहायता से ज्योतिष विभाग अपने छात्रों को ज्योतिष के मौलिक ग्रन्थों का अध्ययन कराता है। योगः कर्मसु कौशलम् इस ध्येयवाक्य को सार्थक करते हुए यहाँ योगविभाग अपने विभाग में छात्रों को प्रायोगिक तथा सैद्धानिक रूप से शारीरिक शिक्षा को प्रदान करता है।

हमारे पाठ्यक्रमों में और गुणवत्तापूर्ण विषय हों इस हेतु को ध्यान में रखते हुए अध्यापनोपरान्त छात्रों से उनकी अध्ययनोपरान्त अभिव्यक्ति चाही गयी। सभी विभागों से सभीं विषयों के छात्रों द्वारा प्रतिपुष्टि प्रदान की गयी। जिनमें से गुणात्मक रूप से एकत्रित की गयी प्रतिपुष्टियों का विभागाध्यक्ष एवं विभागीय शिक्षकों के द्वारा किया हुआ विश्लेषण उद्धरण पूर्वक यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

शुक्लयजुर्वेद - आचार्य तृतीय सत्रार्द्ध के तृतीय प्रश्नपत्र में बृहद्देवता के तृतीय-चतुर्थ अध्याय वर्णित हैं। चूँकि यह अध्याय द्वितीय सत्रार्द्ध के तृतीय प्रश्नपत्र में पूर्व में ही संसाधित है। अतः इसे परिवर्तित करना समुचित होगा।

आचार्य चतुर्थ सत्रार्द्ध के तृतीय प्रश्नपत्र में बृहद्देवता के सप्तम-अष्टम अध्याय जोड़ना चाहिए। क्योंकि वहाँ पर लिखा गया पंचम-षष्ठ अध्याय तृतीय सत्रार्द्ध में देना उचित होगा। जिससे कि अध्यायों की पुनरावृत्ति न हो तथा सम्पूर्ण शास्त्र का अध्ययन भी हो सके।

नव्यव्याकरण - वेद वेदाङ्ग संकाय के अन्तर्गत संचालित व्याकरण आचार्य प्रथम सत्रार्द्ध के प्रथम चतुर्थ प्रश्नपत्र में अच्सन्धिप्रकरण एवं वैयाकरणभूषणसार में विषय की अधिकता है। जिसे कम किया जाए।

व्याकरण को जानने के लिए व्याकरण शास्त्र का इतिहास तथा तत्सम्बद्ध निबन्ध जोड़ना चाहिए।
आचार्य प्रथम सत्रार्ध नव्यव्याकरण के प्रथम प्रश्न पत्र के लघुशब्देन्दुशेखर के पाठ्यक्रम में "अच्सन्धि" प्रकरण को न्यून करके "न पदान्त"... इस सूत्र तक करना चाहिए। तथा चतुर्थ प्रश्न पत्र वैयाकरणभूषणसार के पाठ्यक्रम को "आदितः सुबर्थप्रकरण" पर्यन्त किया जाए।

ज्योतिष, ज्योतिर्विज्ञान एवं वास्तु - एम ए ज्योतिर्विज्ञान प्रथम वर्ष में प्रश्नपत्र क्रमांक 3 पञ्चाङ्ग विमर्श में ग्रहलाघव ग्रन्थ से 3 इकाई हैं। चूँकि यह ग्रन्थ प्रथम सत्रार्द्ध हेतु क्लिष्ट है, अतः इसे हटाना समुचित होगा।
आचार्य सिद्धान्त ज्योतिष तथा आचार्य फलित ज्योतिष के चतुर्थ सत्रार्द्ध में स्वशास्त्रीयेतिहास नामक प्रश्न पत्र है। विषय के इतिहास की जानकारी प्रथम सत्रार्द्ध में ही हो जानी चाहिए।
एम ए ज्योतिर्विज्ञान तृतीय एवं चतुर्थ सत्रार्द्ध में संहिता ज्योतिष के अन्तर्गत बृहत्संहिता के सीमित अध्याय लगे हैं। यदि कुछ अन्य उपयोगी अंश जोड़े जा सकें, तो समुचित होगा।
एम ए ज्योतिर्विज्ञान प्रथम सत्रार्द्ध के प्रथम प्रश्नपत्र ज्योतिर्गणित में ज्योतिर्वैज्ञानिक परिभाषाओं की चर्चा में परिभाषाएँ चिह्नित नहीं की गयी हैं, जिससे परीक्षा में भी संशय बना रहता है।
एम ए वास्तु के पाठ्यक्रम में ज्योतिष का प्रारम्भिक ज्ञान नहीं दिया गया, जिससे वास्तुग्रन्थों में आने वाले ज्योतिषीय पारिभाषिक शब्दों को समझने में समस्या उत्पन्न होती है।

संस्कृतसाहित्य - वेद वेदाङ्ग संकाय के अन्तर्गत संचालित साहित्य आचार्य के किसी भी प्रश्नपत्र में परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं हैं।

विशिष्ट संस्कृत विभाग - एम. ए. विशिष्ट संस्कृत के प्रथम वर्ष में प्रथम वर्ष के द्वितीय प्रश्नपत्र का पाठ्यक्रम क्लिष्ट है, अतः इसे कुछ सरल किया जाना समुचित होगा।
एम. ए. विशिष्ट संस्कृत के द्वितीय वर्ष के तृतीय सत्रार्द्ध में पाठ्यक्रम में प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से ग्रन्थों को सम्मिलित किया जाए।

योग - चूंकि हमारा विश्वविद्यालय संस्कृत विश्वविद्यालय है कारणवश प्रथम सत्रार्ध में संस्कृत को महत्त्व देते हुए अनिवार्य रूप से अध्ययन कराना चाहिए।

शिक्षाशास्त्र – भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान को क्रमबद्ध और कुछ शास्त्रसम्बद्ध होना चाहिए। संस्कृत सम्भाषण को प्रायोगिक पाठ्यक्रम में जोड़ने की अपेक्षा रखते हैं।